भाईचारा

भाईचारा इतना अधिक अपनी भारत की रेलवे यात्रा के दौरान देखने को मिला कि हम उसकी चर्चा किये बिना नही रह सकते है । भाईचारा जताना हो और उसका फायदा सभी पक्षो को हो तभी वह सही माना जा सकता है वरना वह पक्षपात और स्वार्थ कहलाता है ।

स्बसे बडी समस्या स्लीपरो मे सीजन टिकट लेकर बे रोक टोक बिना रिजर्वेशन के यात्रा करने बालो से है जो जोर जबरदस्ती करके सोने बाले यात्रियो को उठाकर उनकी सीट पर बैठना ही नही पर उनके स्थानो को दबोचना फिर भाईचारा दिखाना कि तू भी यहाँ बैठ जा जैसे अपनी सीट को बाट रहे हो । इसके बाद यह दुहाई देना कि भारत मे जनसख्या इतनी अधिक है और साधन कम है अतः आपको अपनी सीट शेयर करना चाहिये । इस उदार बृति के दर्शन का आपको ज्ञान देने के दौरान यह भूल जाते है जो लम्बी लम्बी यात्रा कर रहे होते है उनको कितनी असुविधा होती है । उन यत्रियो के मन मे यह बात कचोटती होगी क्या इसी परेशानी के लिये हमने रिर्जवेशन करवाया था पैसा व समय दोनो को बरवाद किया था और साथ ही उन प्रगल्भ सह यत्रियो के स्वार्थ और अवसर वादिता पर मन मे चोट भी पहुचती है । हालँकी उन लोगो को एक आधा घन्टा ही यात्रा करना होती है और इन्हे सिर्फ बैठने बाले डिब्बो की भी जानकारी होती है पर यह जानबूझ कर स्लीपरो मे चढ़ते हैं और अपनी होशियारी का बखान अपने अपने आफिसो कालिजो व घरो मे करते है कि किस तरह इनमे से कुछ तो दूसरो के उपर भी जमकर बैठ जाते है और ताश खेलते है जैसे अपने घर के बिस्तरो पर बैठे हो लोगो को बुध्दू बनाते है ।
भाईचारा अच्छी बात है पर भाई जब चारा अपना न हो तो उसे बाटना अनाधिकार चेष्टा कहलाएगी और इससे समाज मे सौहार्द बढ़ने के बजाय धूर्तता बढ़ रही है । किसी भी समय किसी तरह दूसरो को नुक्सान पहुचाँ कर भी अपना छोटा सा काम सिध्द करना और उसे भाईचारे का जामा पहना देने से कोई समाज सभ्य नही कहला सकता है ।

रश्मि उमेश रोहतगी
24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA Phone : (248) 471-5786
Webpage :www.rurohatgi.com Email:rurohatgi@yahoo.com